गुरुकुल शिक्षा प्रणाली
(Gurukul's Education System)

स्वामी दयानन्द सरस्वती ने वैदिक धर्म के प्रचार हेतु 10 अप्रैल 1875 ई० को आर्य समाज की स्थापना की। हिन्दू धर्म में व्याप्त आडम्बरों एवं हिन्दुत्व की रक्षा हेतु गुरुकुल प्रणाली के अन्तर्गत वैदिक शिक्षा की व्यवस्था की गयी।

गुरुकुल प्रणाली का शिक्षा दर्शन :-

गुरुकुल का शाब्दिक अर्थ है 'गुरु का कुल' अर्थात गुरु का परिवार। प्राचीन काल में पूर्व-प्राथमिक शिक्षा परिवार में ही सम्पन्न होती थी। माता-पिता अपने बालक को कुछ साधारण भाषा ज्ञान एवं शिष्टाचार के बाद गुरु के पास शिक्षा ग्रहण करने भेज देते थे। गुरु अपने घर (आश्रम) में ही बालकों को पुत्रवत पालते हुये विद्याध्ययन कराता था। 25 वर्ष तक गुरु गृह में बालक ब्रह्मचर्य एवं संयम-नियम के साथ अध्ययन करता था।

गुरुकुल प्रणाली की मौलिक धारणाएँ :-

(i) बालक को 25 वर्ष तक पूर्ण ब्रह्मचर्य आत्मानुशासन एवं आदर्श वातावरण की आवश्यकता

(ii) गुरु परिवार के प्रति माता-पिता तुल्य श्रद्धा।

(iii) सादा जीवन, उच्च विचार एवं स्वावलम्बन।

(iv) सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् की खोज।

(v) आत्मअभिव्यक्ति एवं स्वक्रिया पर आधारित शिक्षा।

गुरुकुल प्रणाली के उद्देश्य

(i) सर्वांगीण विकास का उद्देश्य।

(ii) राष्ट्रीयता की भावना का विकास करना।

(iii) वैदिक धर्म एवं आर्य संस्कृति में आस्था।

Scanned with CamScanner

(iv) गुरु शिष्य सम्बन्ध को घनिष्ठ एवं दृढ़ करना।

(v) व्यवसायिकता का विकास करना।

गुरुकुल प्रणाली की पाठ्यचर्या

(अ) प्राचीन एवं वैदिक शिक्षा साहित्य -

(i) पाणिनी व्याकरण - सरल भाषा, वर्णोच्चारण
(ii) व्याकरण तथा व्याकरण विज्ञान
(iii) छन्दशास्त्र एवं पिंगलशास्त्र
(iv) मनुस्मृति, रामायण (वाल्मीकि), महाभारत।
(v) धर्मशास्त्र एवं ऋषि टीकाएं
(vi) चार ब्राह्मण ग्रन्थ
(vii) ज्योतिष, अंकगणित, भूगोल, भूगर्भ-विज्ञान
(viii) चार उपवेद।

(ब) आधुनिक ज्ञान-विज्ञान एवं साहित्य -

(i) भारतीय एवं विदेशी भाषाएं एवं साहित्य संरचनाएं
(ii) भौतिक शास्त्र, रसायन शास्त्र, जीवविज्ञान,
(iii) इतिहास (भारतीय - पाश्चात्य)
(iv) राजनीति शास्त्र
(v) वाणिज्य एवं व्यापार
(vi) आधुनिक तकनीकि एवं चिकित्सा

Scanned with CamScanner

गुरुकुल प्रणाली के कार्यक्रम :-

जागरण एवं दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति - प्रातः
4 से 5 बजे तक ।
योगाभ्यास, संध्यायन - 5 बजे से 7 बजे तक
स्वाध्याय - 7½ से 9½ बजे तक
कक्षायें — दोपहर 12 बजे तक
दोपहर का भोजन — 12½ बजे तक
विश्राम - अपरान्ह 2 बजे तक
कक्षायें — अपरान्ह 2 बजे से सायं 5 तक
खेलकूद — 5 बजे से 7 बजे तक
शुद्धि, संध्योपासना — सायं 7 बजे से 8 बजे तक
रात्रि का भोजन - 8½ बजे रात्रि ।
स्वाध्याय — रात्रि 9 बजे से 10 बजे तक
शयन - रात्रि 10 बजे ।

गुरुकुल प्रणाली की विशेषताएं :-

गुरुकुल जीवन की विशेषताओं में ब्रह्मचर्य, साधना, तपस्या, सहनशीलता एवं विनयशीलता प्रमुख हैं । उन्हें शुद्ध, शाकाहारी, सुपाच्य भोजन दिया जाता था । गुरुकुल में सभी को लकड़ी की खड़ाऊँ पहनना, यज्ञोपवीत धारण करना, यज्ञ करना अनिवार्य होता था ।